Pratnakīrti, Volume 5, Issue 2, 2024 ISSN: 2322-0694

संस्कृत-पत्रिकाओं में प्रकाशित एकाङ्की रूपकों का अवलोकन एवं उनकी सूची

अमर दयाल[1] एवं लाला शङ्कर गयावाल[2]

[1]शोधच्छात्र, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय
भरतपुर, राजस्थान
amardayal1983@gmail.com
[2]आचार्य एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष
रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय
भरतपुर, राजस्थान
lalashankar23@gmail.com

सारांश

ईसा पूर्व 500 के आसपास रङ्गमञ्च नाट्यकृतियाँ और नाट्य सूत्रों का प्रणयन होने लगा था, इसी समय से ही रङ्गमञ्च और अभिनय से सम्बन्धित अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रचलन प्राप्त होता है। आचार्य भरत की रचना के बाद नाट्य, रङ्गमञ्च और नाट्यकृतियों का समग्र शास्त्र ही तैयार हो गया जिसे नाट्यशास्त्र कहा गया। इसके अनन्तर यह शास्त्र ही काव्यशास्त्र के क्रमिक विकास का मूल ग्रन्थ सिद्ध हुआ, इसे 'पञ्चम वेद' के नाम से भी अभिहित कहा जाता है। मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए आरम्भ में नृत्य का सहारा लिया जाता था, उसके बाद यह भाव-भङ्गिमाओं और संवादों से युक्त हो अभिनय के रूप में प्रचलित हुआ। नाट्य के विकास की यह यात्रा प्रायः एकाङ्की नाट्यकृतियों के रूप में आरम्भ हुई होगी। ऐसी रचनाओं का आधार कोई न कोई एक घटना रही होगी और इस घटना के आधार पर कहानी के कथ्य और तथ्य को नृत्य, वाद्य और गायन आदि के साथ उनका सुन्दर प्रसारण होता होगा। यहीं से एकाङ्की रूपकों की प्रस्तुति प्रारम्भ हुई। बाद में अनेक घटनाओं को क्रमिक रूप से एकत्रित करके जब अभिनय या नाट्यमञ्चन किया जाने लगा तो वह विस्तृत घटना नाटक का रूप लेने लगी।

मुख्यशब्द: रूपक, एकाङ्की रूपक, उपरूपक, संस्कृत पत्रकारिता

प्राचीन शास्त्रों में वर्णित दशविध रूपकों के आकलन से यह बात भी सिद्ध होती है कि उत्तम कोटि के रूपकों का कलेवर वर्णन की दृष्टि से छोटे ही होते थे, तभी तो दशावतार रूपकों में पाँच रूपों का उल्लेख एकाङ्की रूपकों के रूप में ही प्राप्त होता है। महाकवि भास द्वारा रचित तेरह नाटकों में अनेक एकाङ्की रूपक इसकी प्रसिद्धि और ख्याति को ही बतलाते हैं। संस्कृत का पहला एकाङ्की रूपक चतुर्भाणी के रूप में प्राप्त होता है। चतुर्भाणी के पश्चात् संस्कृत में जो एकाङ्की रूपकों की परम्परा चली वह अद्यावधि चल रही है।

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' तथा *'नाटके नटवन्नित्यं रसास्वदः पदे-पदे'* इत्यादि वाक्यों द्वारा समीक्षकों ने रूपक साहित्य की रमणीयता और मनोहरिता का युक्तियुक्त आकलन किया है। आज के वैविध्ययुक्त कार्यकलाप में रूपक की महत्ता को अग्रसर कर लोकानुरञ्जन और

Lalashankar Gayawal and Umesh Kumar Singh (Ed.) pp. 85-99
© Pratnakīrti Oriental Research Institute, Vārāṇasī, U.P., India
Recieved 10 July 2024, Accepted 05 September 2024
This paper is available at https://www.pratnakirti.com/Home/Index

लोकसंरक्षण के लिए एकाङ्की रूपकों की रचना को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया जाता है। संस्कृत-वाङ्मय की प्राचीन काल से रचनाधर्मिता में एकाङ्की रूपकों की परख नाट्यशास्त्रकारों ने की ही है। एकाङ्की रूपकों के कथ्य और तथ्य लोकमनोरञ्जन, अर्थात् मनोरञ्जन से आनन्दमग्न करने के साथ-साथ अद्भुत शिक्षा प्रदान करने में भी अग्रणी रहे हैं।

1 रूपकों के भेद

भारतीय नाट्य-परम्परा में नाट्यशास्त्रकार आचार्य भरत से लेकर साहित्यदर्पणकार कविराज विश्वनाथ के साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थों में मुख्य रूप से रूपकों के दशविध भेद एवं गौण रूप से दशाधिक उपभेदों का वर्णन प्राप्त होता है। दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने स्पष्ट लिखा है-

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्कैहामृगा इति॥[1]

नाट्यदर्पणकार आचार्य रामचन्द्र-गुणचन्द्र और हेमचन्द्राचार्य ने रूपकों के 12 भेदों का वर्णन अपन-अपने ग्रन्थों में किया है -

नाटकं प्रकरणं च नाटिका प्रकरण्यश्च।
व्यायोगः समवकारौ भाणः प्रहसनं डिमः।
अङ्क ईहामृगो वीथिश्चत्वारः वृत्तयः स्मृताः॥[2]

भरतमुनि के दस रूपक भेदों में नाटिका और प्रकरणी भेद जोड़कर बारह भेद रूपक के किए गए हैं तथाहि नाटक, प्रकरण, नाटिका, प्रकरणी, व्यायोग, समवकार, भाण, प्रहसन, डिम, अङ्क, ईहामृग और वीथि ये 12 भेद रूपक के माने गए हैं। काव्यानुशासन के रचयिता हेमचन्द्र ने भी अपने काव्य-भेद में पहले काव्य के प्रेक्षा और श्रव्य दो भेद करने के बाद प्रेक्षा को पुनः पाठ्य और गीत में विभक्त करते हैं।[3] इस प्रकार काव्यानुशासन में नाटक, प्रकरण, नाटिका, समवकार, ईहामृग, डिम, व्यायोग, वीथि, सट्टक, प्रहसन, भाण और उत्सृष्टाङ्क बारह भेद पाठ्य के तथा डोम्बिका, भाण, प्रस्थापक, षिङ्गक, भणिका, प्रेङ्खण, रामाक्रीड, हल्लीसक, रासक, गोष्ठी, श्रीगदित एवं काव्य ये बारह भेद गेय के बतलाए गए हैं। अभिनवगुप्त ने अपनी टीका अभिनवभारती में डोम्बिका, भाण, षिद्गक, भाणिका, प्रेरण, रामाक्रीड, हल्लीस एवं रासक गौणरूपकों के प्रकारों का उल्लेख किया है।

1.1 एकाङ्की रूपकों के प्रकार

रूपकों और उपरूपकों के इन भेदों में रूपकों में भाण, प्रहसन, व्यायोग, वीथि, और अङ्क या उत्सृष्टाङ्क तथा उपरूपकों में गोष्ठी, नाट्यरासक, रासक, भणिका, विलासिका, उल्लाप्य,

[1] दशरूपकम्
[2] नाट्यदर्पण अध्याय-02
[3] काव्यानुशासन अध्याय-08

श्रीगदित, हल्लीस, प्रेक्षणक, प्रेङ्खण, और काव्य एकाङ्की विधा के अर्थात् एक अङ्क वाले रूपक हैं। आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार ईहामृग रूपक भी एक अङ्क का होता है।[4]

1.2 रूपक का अर्थ और विकास

नाट्य की उत्पत्ति और इसका आरम्भ एकाङ्की रूपकों द्वारा ही हुआ होगा यह सिद्ध होता है। मनोरञ्जनार्थ एकाङ्की रूपक ही प्राचीन काल से उल्लिखित और प्रसिद्ध माने जाते हैं जैसे, ऋग्वेद का यम-यमी संवाद,[5] पुरूरवा-उर्वशी संवाद[6] तथा दशम मण्डल के सोमयज्ञ के प्रसङ्ग में इन्द्र के सूक्त। महाभाष्यकार पतञ्जलि के महाभाष्य में उल्लिखित कंसवध आदि निर्देशों से एकाङ्की रूपकों की प्राचीनता सर्वत्र परिपुष्ट होती है। सम्भवतः एकाङ्की रूपकों का आरम्भ लघु-लघु हास्यपरक संवादों के माध्यम से हुआ होगा, यही कालान्तर में प्रहसन के रूप में ख्यात और विख्यात हो गए।

मध्यकाल में मुस्लिमों के प्रभुत्व के कारण राजदरबार और दरबारी भोगी, लोलुप और मद्यपायी हो गए, फलतः विद्वानों के द्वारा होने वाली श्रेष्ठ साहित्य की रचना भी प्रभावित हुई। कुछेक छोटे-छोटे प्रान्त के क्षत्रिय राजाओं ने अपने दरबार के कवियों के माध्यम से रूपकों की रचनाएँ करवाईं, जो निःसन्देह राजधर्म में व्यस्त तथा राज्यसत्ता से सन्त्रस्त जनता के लोकानुरञ्जनार्थ, माङ्गलिक पूजनोत्सव और यात्रा आदि के अवसर पर राजाज्ञा से सम्पादित होते रहते थे। ऐसे माङ्गलिक उत्सवों में आसपास और दूर प्रदेश के निवासी भी भाग लेते थे। इन अवसरों पर ही एकाङ्की रचनाओं के माध्यम से पात्रगण राजाओं का वन्दन, सहृदय सामाजिकों का मनोरञ्जन किया करते थे, जिसमें मनोरञ्जन के साथ-साथ लोक सुधार की भी भावना विद्यमान रहती थी।[7]

महाकवि भास द्वारा मर्यादित एकाङ्की रूपकों की इस परम्परा को परवर्ती रूपककारों ने मध्यकालीन भारत की बिगड़ती हुई दशा को सुधारने के लिए भाण, प्रहसन, व्यायोग, अङ्क, वीथि आदि एकाङ्की रूपक प्रकारों की रचना को अग्रेषित किया। जैसे *करुणकन्दल* (अङ्क), *इन्दुलेखा* (वीथि), *आनन्दकोश* (प्रहसन), *निर्भयभीम* (व्यायोग) आदि का उल्लेख *नाट्यदर्पण* और *रसार्णवसुधाकर* जैसे ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। भास के एकाङ्की रूपकों में वर्णित विषय निम्नवत् प्राप्त होते हैं-

मध्यव्यायोगः – विपत्ति से दीनदुःखियों की रक्षा करना ही मनुष्य का कर्तव्य बतलाया गया है।

दूतवाक्यम् – अपने व्यवहार में नीचता दिखलाना मानवता के अधःपतन का सूचक होता है।

कर्णभारम् – दान पुण्य द्वारा यशःशरीर का संरक्षण ही परम कर्त्तव्य बताया गया है।

उरुभङ्गम् एवं *दूतघटोत्कचम्* – युद्ध की भीषणता का चित्रण करके मानवता को उससे विरत

---

[4]ईहामृगश्च कथितो यथा कुसुमशेखरः। विप्रत्यय करोति विगतानि प्रत्ययकारणानि विश्वासहेतवो यत्र। तेनैव एकाङ्कः। आचार्य अभिनवगुप्त, *अभिनवभारती*

[5]ऋग्वेद 10.10

[6]तत्रैव 10.85

[7]धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥ *नाट्यशास्त्र* 1.115

करने का उपदेश दिया गया है।

1.3 आधुनिक संस्कृत पत्रिकाओं में एकाङ्की रूपक

संस्कृत एकाङ्कियों की यह परम्परा आज भी अक्षुण्ण रूप से चली आ रही है जिसका निदर्शन नीचे के विमर्श तथा प्रस्तुत सूची से प्राप्त होगा। उल्लेखनीय है कि यह समस्त रूपक या एकाङ्की संस्कृत-पत्रिकाओं में यथासमय प्रकाशित हुये हैं।

करपटपरित्याग: अजस्रा संस्कृत पत्रिका में श्री कपिलदेव द्विवेदी द्वारा रचित एवं प्रकाशित एकाङ्की रूपक 'करपटपरित्यागः'[8] ऋतु परिवर्तन की समानता पर आधारित है। शिशिर ऋतु आने पर अक्सर ठण्ड से बचने के लिए रुमाल धारण किया जाता है; लताएँ तब लुप्त हो जाती हैं, पुनः वसन्त ऋतु में लताएँ विकसित हो जाती हैं तब करपट का परित्याग कर दिया जाता है। यह रूपक रुमाल का परित्याग है। इस एकाङ्की में लक्ष्मणपुरवासी स्वर्गीय पार्थिव गुप्त की पत्नी कुसुमलता न्यायाधीश से निवेदन करती है कि मेरी पुत्री माधुरी को अमावस्या की रात्रि में शिशिर ने मेरे घर से अपहरण कर लिया है; शय्या पर शिशिर का रूमाल प्राप्त हुआ है, इसलिए माधुरी को मुझे देकर शिशिर को दण्ड देना चाहिए। शिशिर (सर्दी) को लक्ष्य करते हुए लिखते हैं –

> सरसमधुरवाचा मानसं मे विशन्ती सरसिजवरनेत्रा शोभयाऽऽविस्फुरन्ती।
> सुतनुतनुसमृद्धा वायुना वेपमाना कथय किमुत छिन्ना माधुरी खिद्यमाना॥[9]

आरक्षक शिशिर को न्यायालय में लाते हैं, किन्तु माधुरी नहीं थी। न्यायाधीश ने पूछा – क्या तुमने माधुरी को अपहृत किया है? शिशिर बोला – *नहि, अवश्यं चतुर्थीचन्द्रो मया दृष्टो येन एवं कलङ्कितोऽस्मि।*[10] गवाह के रूप में कुसुमलता की बेटी सुधा को प्रस्तुत किया जाता है और कहती है कि अमावस्या तिथि की रात्रि में शिशिर हमारे घर आया; वर्षा होने के कारण घर नहीं जा सका था। प्रातः माधुरी को नहीं देखा तो माता ने कहा – मैं जब उसकी शय्या के पास गई तो शय्या खाली थी, शय्या पर करपट (रुमाल) था। न्यायाधीश ने पूछा – क्या यही शिशिर का करपट है? सुधा बोली – शिशिर कभी-कभी हमारे घर आता है, उसका करपट पूर्व में देखा, वह परिचित है। माधुरी के पड़ोसी तुलादत्त ने रात्रि में आठ बजे आता हुआ देखा था। शिशिर से साक्ष्य के बारे में न्यायाधीश ने पूछा, तो शिशिर ने कहा – मैं अकेला गया था, अकेला आया था, कोई साक्ष्य नहीं है। तत्पश्चात् वसन्त और माधुरी दोनों न्यायालय आते हैं। माधुरी कहती है कि यह मेरी कक्षा का मित्र है, साथ-साथ रहने से मित्रता हो गई है; अमावस्या तिथि को वसन्त के साथ चलचित्र देखने गई थी, तब से उसी के घर थी; बचपन से ही प्रेम के पाश में बँधे थे; वसन्त मेरा प्राणनाथ हो गया है; विवाह

[8] अजस्रा जुलाई 1977 पृष्ठ 19
[9] तत्रैव पृष्ठ 20
[10] तत्रैव

पञ्जीयन हेतु हम दोनों न्यायालय में उपस्थित हुए हैं। माता कुसुमलता पुत्री को सौभाग्यवती का आशीर्वाद देती है – *"कथञ्चित् स्वेच्छया विधिना वा, रत्नं रत्नेन सङ्गतम्"।*[11] इसके बाद माता और शिशिर दोनों विवाह के साक्षी बन जाते हैं। अन्त में कुसुमलता आशीर्वाद देती है–

यथा कला चन्द्रमसं सुधामयी यथा प्रभातं सुषमा प्रभामयी।
तथा वसन्तं सरसा सुकोमला समेहि भो माधुरि! रागविह्वला॥[12]

कृषिफलम् कृषिफलम्[13] डॉ॰ शशि नाथ झा प्रणीत एक एकाङ्की आकाशवाणी रूपक है। इसका प्रसारण आकाशवाणी दरभङ्गा से हुआ है। रूपक का कथानक कृषिफल की समता में प्रदर्शित है। इस रूपक में भूषण के पिता पूरण से भूषण का मित्र मङ्गल कहता है कि आपका पुत्र स्नातक प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ है अतः उत्सव मनाइये और मिठाई वितरित कीजिए। इस प्रकार के प्रसन्नता दायक समाचार सुनाकर मिठाई अवश्य प्राप्त करोगे। मङ्गल कहता है कि परीक्षा परिणाम सुनने के बाद समाचार पहुँचाने के लिए मुझे निवेदन करके भूषण पाटलिपुत्र चला गया है। पूरण कहता है कि भूषण क्यों चला गया। सबसे पहले इस अवसर पर कुलदेवता, माता-पिता के चरणस्पर्श करके समाज में उत्सव का आयोजन करना चाहिए। आधुनिक युवक विपरीत ही सोचते हैं, हम वृद्धों के वचन कौन सुनता है? मङ्गल- आपका आदर्श एवं निर्देश और आशीर्वचन प्राप्त करके हम सभ्यता और शिक्षा प्राप्त किए हैं। परसों आकर सब स्वीकार कर सम्पादित करेगा। पूरणः सबसे पहले उपेक्षा करके क्यों गया।

मङ्गलः उज्ज्वल भविष्य की कामना पाटलिपुत्र के लिए प्रेरित किया है, जीविका लाभ के लिए मन्त्री महोदय के पास गया है। संवाद के माध्यम से अध्ययन की उपादेयता का वर्णन है–

मङ्गल: – अध्ययनस्य फलं तु जीविकालाभ एव। सा यदि अधुनैव लभ्यते, तर्हि अलम् अग्रेऽध्ययनेन।
पूरण: – (खिन्नः सन्) अध्ययनस्य फलं जीविकालाभाय इत्येव युष्माकं ज्ञानम्? मन्मते तु अध्ययनस्य फलं मनुष्यत्वलाभः, सुसंस्कृतस्य सभ्यसमाजस्य आदर्शस्थितिः। अध्ययनस्य फलं राष्ट्रोन्नतिः। उदरपूरणं तु कुक्कुराः अपि कुर्वन्ति। जीविका तु उद्यमेन, लग्नशीलतया, श्रमेण च लब्धुं शक्यते।
मङ्गल: – न वयं कुक्कुराः इव जीवितुम् ईहामहे।
पूरण: – विरम, विरम मङ्गल! नहि धनेनैव सर्वं भवति। मूर्खाः अपि उद्यमेन प्रचुरं धनम् उपार्जयन्ति, प्रासादे वसन्ति, महार्घवस्त्रं परिदधति, मृत्तरयाने चलन्ति। किन्तु समाजे तेषां गणना आदर्शे न भवति। अल्पवित्तानामपि विदुषां गणना आदर्शरूपे जायते। मन्मते जीविका न केनापि दीयते, अपितु स्वयं निर्धार्यते।[14]

[11]तत्रैव पृष्ठ 22
[12]तत्रैव पृष्ठ 23
[13]अजस्रा, जुलाई अक्टूबर 1996 पृष्ठ 59
[14]तत्रैव पृष्ठ 61-62

इस रूपक में कृषि कार्य के प्रति समर्पण एवं यही जीविका का समस्त साधन बताते हुए बैल को इस कार्य का सबसे बड़ा उपकारक बताया गया है। यथा पूरण कहता है–

> रे रे वृषभ! भक्षय, भक्षय! त्वमेव मम सम्बलरूपेण सहायकोऽसि। तव प्रसादाद् यदेव उपार्जयामि, तावतैव गृहे गृहिणी अन्नपूर्णारूपेण योगक्षेमं निर्वाहयति। कन्यकाः श्वशुरालये वसन्ति। वर्षद्वयात् पुत्रः भूषणः कञ्चनत्वम् इति कुर्वन् मासमध्ये क्षणं गृहमागत्य बहिर्यातीति न जाने। तस्मिन् क्रियमाणो व्ययः किं फलं दास्यतीत्यपि न जाने। जाने केवलं त्वामेव फलदातारम्, कृषिफलदातारम्। प्रेम्णा भक्षय, भक्षय।

अपि च-

> . . . ममेयं कृषिः, या मम साधना, मम सर्वस्वम्, ममावलम्बनम्, ऐषमः सा, मन्ये अस्तं यास्यति!! न मे शरीरं क्षमम्, न वा आर्थिकी स्थितिस्तादृशी। हन्त! हन्त! मम प्राणाः, मम कृषिश्च पर्यायत्वेन सन्ति। कण्ठे प्राणेषु सत्सु कथं प्रयाति कृषिः?[15]

मन्थराचरितम् डॉ॰ ओमप्रकाश तिवारी द्वारा रचित एकाङ्की रूपक का कथानक मन्थराचरित[16] की साम्यता में प्रदर्शित है। इसका पात्र प्रतिष्ठा मन्थरा जैसी व्यवहार करती है। अर्चना की पड़ोसन शालिनी को दुश्चरित्र कहती है। साधना और अर्चना नाम की महिला पात्र वार्तालाप करती हुई कहती हैं–

साधना – अर्चना तुम्हारा पति रूष्ट एवं भ्रष्ट है जिसके कारण आपको सुख नहीं मिलता। आपका पति शालिनी के घर प्रतिदिन जाता है, जिसके कारण कार्यालय से विलम्ब से आता है। अन्त में रूपककार पाठकों को मन्थरा चरित्र जैसी महिलाओं से सचेत करते हुए लिखता है–

> विद्यन्तेऽद्यापि लोकेऽस्मिन् मन्थरा विश्वदूषकाः।
> ताभ्यो दूरे भवन्त्वार्याः स्मृतिशीलसुसंयुताः॥[17]

काशिराजवधम् डा॰ सुदर्शन कुमार शर्मा द्वारा रचित है। इस एकाङ्की रूपक का कथानक काशिराजवधम्[18] की साम्यता में प्रदर्शित है। ब्रह्मदत्त काशी राज्य में एक महान राजा थे। उस समय उस राजा के वंशज राजा विष्णुसेन हुए। उसकी दशा का वर्णन करते हुए लिखा गया है–

> द्यूत-क्रीडा क्रिया तस्य मृगया व्यसनं तथा।
> स्त्रीमद्यद्यूत-संसर्गः प्राणिनां हितनाशकः॥[19]

---

[15] तत्रैव पृष्ठ 68
[16] अजस्रा, जुलाई अक्टूबर 1983 पृष्ठ 59
[17] तत्रैव पृष्ठ 65
[18] अजस्रा, जनवरी अप्रैल 2009 पृष्ठ 33
[19] तत्रैव

काशी का राज्य महान राज्य और राजाओं के वंश का एकमात्र आभूषण है। नटी कहती है कि आपने कौन सा विनाशकारी मार्ग प्राप्त किया जिसके द्वारा आप इस प्रकार बोलते हैं। राजा दुनिया के आनुष्ठानिक मानक के आचरण की प्रशंसा करते हैं। वह लोगों द्वारा शुभकामना रखने वाली पौरुष को बढ़ाने वाली तथा शौर्य शक्ति और साहस के वृद्धि से जुड़ी हुई है। महासेन राजा की पत्नी कहती है कि राजा एक महान राजा है जो अपने सेवकों को मनोरञ्जन कार्यों में ले जाता है। अकेले दोषारोपण के दोष पर बैठे रहने वाले मूर्ख से अन्तःपुर सन्तुष्ट नहीं होता। प्रतिहारी कहती है कि बभिया की महान सेना महासेन महान राजा था, वह कौशल के राजा से जुड़ा हुआ था और राज्य के मामलों का दर्शक था। सुप्रभा समय और यौवन का यही एकमात्र श्रृङ्गार है। राजा रङ्गों का राजा है क्योंकि राज्य मन्त्रियों द्वारा प्राप्त किया जाता है–

ब्रह्मदत्तेन यद्राज्यं दत्तं पौरुषसंस्कृतम्।
योगक्षेमैकभावित्वात् मण्डलैकहिताहितम्।[20]

सुप्रभा बादरायण से पूछती है कि महाराज कहाँ हैं? युवराज कहाँ है? जो राजकुमार बनने का हकदार था, पिता-पुत्र किस काम से गए हैं? कञ्चुकी ने बताया कि युवराज के हाथ में धनुष-बाण भी था, वह शिकार की तैयारी के लिए जल्द से अकेले ही वन क्षेत्र में चले गये। सुप्रभा क्रोधित हो महाराजा महासेन को बुलाती हैं। महासेन आकर प्रसन्न हो और अपना क्रोध आवेश छोड़ दें; कार्य की अत्यधिक बोझ के कारण मैं लापरवाही ही नहीं करता। सुप्रभा – आर्यपुत्र, वह आपके अशान्त मन से सन्तुष्ट नहीं थी कि वह देख नहीं सकती थी, परन्तु राज्य का भार भोगने के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है, नाहिं भोजन करने का भी समय है। कृपया बैठ जाइये, मैं व्यञ्जनों को लेने जा रही हूँ, यह मीठा स्वाद एक रसायन है और इसे पीने के लिए मद्य तैयार किया गया है। महासेन मद्य पीते ही मूर्छित हो गए। सुप्रभा – वैद्य को बुलाइये, दवा लाइये, मूर्च्छा का निवारण कीजिये। वैद्य के आने के बाद नाड़ी देखकर राजा मर गए हैं। राज्य में हाहाकार मच जाता है। भरत वाक्य सुप्रभा –

अराजकं राज्यं स्यात्, कुमारो भवतु राज्यकृत्।
प्रजाः प्रजा इव मत्वा सर्वं किञ्चिच्छुभं भवेत्॥[21]

मन्त्रदानम् मन्त्रदानम्[22] बाबूराम अवस्थी द्वारा रचित है। इस एकाङ्की में एक दस्यु निर्दय सिंह दशवीं की प्रियतमा चम्पा को एक सुन्दर आभूषण लाकर देता है और कहता है इसे धारण करो बहुत सुन्दर लगोगी। लेकिन चम्पा कहती है कि यह आभूषण मैं नहीं धारण करूँगी, क्योंकि- *रक्तरञ्जितमिदमाभूषणम्, कस्यचित् अबलायाः चीत्कारमिश्रैः शब्दैः दूषितं वर्तते।*[23] निर्दय सिंह कहता है कि न जाने कितने लोग दूसरों का शोषण करके अपना उदरपूर्ति करते हैं।

[20]तत्रैव पृष्ठ 34
[21]तत्रैव पृष्ठ 3
[22]अजस्रा जुलाई अक्टूबर 1986 पृष्ठ 37
[23]तत्रैव पृष्ठ 38

नाना प्रकार के सुखों का उपभोग करते हैं; उनका लोक-परलोक दुष्ट नहीं होता है क्या? चम्पा कहती है कि यदि सत्य रूप में मुझसे अनुराग है तो मेरी प्रार्थना स्वीकार करो कि हे नाथ! दस्युता को छोड़कर भिक्षा से भी जीवनयापन करती हुई तुम्हारे साथ सुख का अनुभव करूँगी। दस्यु निर्दय सिंह ने दस्युता छोड़ दी तथा प्रायश्चित्त करने हेतु एक पण्डित जी के पास जाकर बोले कि इस संसार में किन उपायों से पापमुक्त हो सकता हूँ। मेरा नाम दस्यु निर्दय सिंह है, मैंने दस्युता छोड़ दी है। ऐसा सुनकर पण्डित जी उससे भयभीत हो ''मुझे बचाओ, मुझे बचाओ'' भाग गए। उसके बाद मुनि के पास जाकर बोले तो मुनि ने अपने तप बाधक मानते हुए मना कर दिया। तब एक महात्मा से निर्दय सिंह कहता है मुझे शिष्य बनाकर मन्त्र दीजिए जिससे मैं पापमुक्त हो जाऊँ। महात्मा जी ने कृष्णवर्ण की पताका देकर तीर्थ यात्रा करने के लिए कहा कि जिस तीर्थ में यह पताका श्वेतवर्ण की हो जाएगी, वहीं से तुम लौटकर मेरे पास आ जाना, तब मैं मन्त्र दूँगा। वह निर्दय सिंह सपत्नीक सभी तीर्थ घूमने पर भी उसकी पताका श्वेत नहीं हुई। अब तो मरना ही श्रेष्ठ है, ऐसा विचार कर ही रहा था कि तभी चम्पा को एक अबला की ध्वनि सुनाई दी कि ''मुझे बचाओ, मुझे बचाओ''। निर्दय सिंह दौड़ कर जाते हैं, दुष्ट पर मुष्टिका प्रहार करते हैं तथा पताका के डण्डे को फेंक कर मारते हैं; जैसे ही पताका को देखे हैं तो पताका श्वेतवर्ण की हो गई है। महात्मा के पास आकर ''आपकी अनुकम्पा से पताका श्वेतवर्ण की हो गई है''। महात्मा बोले – तुम्हारे द्वारा ७९ हिंसा स्वार्थ के लिए किया गया और एक हिंसा परोपकार अबला की रक्षा के लिए किया गया; तुम्हारे सभी पाप नष्ट हो गए हैं, अब मन्त्र को धारण करो –

परमात्मा सदा सर्वं पश्यतीति न विस्मरेत्।
तस्य बाहू विशालौ तु ज्ञात्वा सत्कर्म चाचरेत्॥
प्रवृत्तयः परहिते पुण्ये मनसा निष्कलेन यः।
समाचरति कर्तव्यं स सुखं समवाप्नुयात्॥[24]

इस प्रकार संस्कृत पत्रिकाओं में प्रकाशित एकाङ्की रूपकों में समाज में व्याप्त कुरीतियों पर आघात करते हुए समाज को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई है। प्रायः रूपककारों की रचना का उद्देश्य भी समाज को मनोरञ्जन के माध्यम से जागरूक करने का ही रहा है। इस दृष्टि से इन एकाङ्की रूपकों के अध्ययन-अध्यापन की नितान्त आवश्यकता है। इस प्रकार अन्यान्य संस्कृत की पत्रिकाओं में प्रकाशित एकाङ्की रूपकों का सङ्ग्रह कर उसकी सूची सङ्कलित की गई है। संस्कृत एकाङ्की रूपकों पर अनुसन्धान करने अथवा एकाङ्की रूपकों के अध्यवसाय में संलग्न अध्येताओं को लाभ प्राप्त हो सके, इसी आशा के साथ यह सङ्ग्रह प्रस्तुत है।

[24]तत्रैव पृष्ठ 44

तालिका 1: एकाङ्की रूपकों का सङ्कलन

क्र॰	एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
1	कृषिफलम् (आकाशवाणी रूपक)	डॉ शशिनाथ झा (दरभङ्गा, बिहार)	अजस्रा जुलाई-अक्टू. 1996 पृ.सं.59
2	काशीराजवधम् (लघुरूपकम्)	डॉ सुदर्शन कुमार शर्मा परवाणु	अजस्रा जन.-अप्रैल 2009 पृ.सं.33
3	करपटपरित्यागः	स्व. कपिलदेव द्विवेदी	अजस्रा जुलाई-अक्टू. 1977 पृ.सं.19
4	मन्थराचरितम् (लघुनाटिका)	डॉ ओमप्रकाश तिवारी, लखनऊ	अजस्रा जुलाई-अक्टू. 1983 पृ.सं.59
5	मन्त्रदानम् (लघुरूपकम्)	बाबूराम अवस्थी (लखीमपुर खीरी)	अजस्रा जुलाई-अक्टू. 1986 पृ.सं.37
6	रूपमति (नाट्यरासकम्)	राजेन्द्रमिश्रः	दूर्वा (रजतम्) पंचविशेषांक 24 मार्च 1993 पृ.सं.59
7	प्रणयलेखः (ध्वनिनाट्यम्)	देवर्षि कलानाथ शास्त्री	दूर्वा तृतीयांक अगस्त 1996 पृ.सं.34
8	धीवरशाकुन्तलम्	राधावल्लभः	दूर्वा (दीपशिखा) ऊनविशेषांक 2 नवम्बर 1990 पृ.सं.91
9	अखिलविश्वं राममयम् (ध्वनिरूपकम्)	कमलारत्नम्	दूर्वा सप्तमांक 1 नवम्बर 1987 पृ.सं.34
10	अभिशप्तदशरथम् (एकाङ्क नाटकम्)	रामकिशोर मिश्रः	दूर्वा सप्तमांक 1 नवम्बर 1987 पृ.सं.43
11	सोमप्रभम्	राधावल्लभः	दूर्वा षोडशो अंक 23 फरवरी 1990 पृ.सं.67
12	मेघसन्देशम् (प्रेक्षणकम्)	राधावल्लभः	दूर्वा (विद्योत्मा) त्रयोविशेषांक 18 नवम्बर 1991
13	करुणाविलासः	आचार्य चन्द्रभानुः	दूर्वा (नवोदिता) अष्टादशोऽक 15 अगस्त 1990 पृ.सं.90
14	(एकाङ्की नाटकम्)	डॉ बलवीर दत्त शास्त्री	संस्कृत मञ्जरी जुलाई-अगस्त-सितम्बर 1991 पृ.सं.22
15	प्रणयविच्छेदः (एकाङ्की नाटकम्)	रामकृष्ण शर्मा	संस्कृत मञ्जरी (त्रैमासिकी) द्वितीय, तृतीयांक जुलाई-सितम्बर 1991 पृ.सं.61

क्रमशः...

(तालिका क्रमशः) – 92

क्र॰	एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
16	कृषिमित् कृशस्व	श्री आशुतोष दयाल माथुरः	संस्कृत मञ्जरी (त्रैमासिकी) जुलाई-दिसम्बर 1994 पृ.सं.15
17	यौतुक यातु (एकाङ्कम्)	आशुकवि श्री सत्यनारायणः शास्त्री	संस्कृत मञ्जरी जनवरी-मार्च 1992 पृ.सं.15
18	कमदहनम् (एकाङ्कम्)	प्रो. ई.पी. भरतपिषारटिः	संस्कृत मञ्जरी जनवरी-मार्च 1992 पृ.सं.52
19	अहं यौतुकं न ग्रहिष्यामि	शास्त्री ओमप्रकाश राही (लब्ध चतुः स्वर्णपदक)	संस्कृत मञ्जरी अप्रेल-जून 1993 पृ.सं.40
20	क्षान्तिसागरः (एकाङ्की नाटकम्)	मेवाराम कटारा पङ्क	संस्कृत मञ्जरी अप्रेल-जून 2002 पृ.सं.20
21	भारताभ्युदयम्	डॉ दशरथ द्विवेदी	संस्कृत मञ्जरी अप्रेल-जून 2002 पृ.सं.41
22	कामनाकिसलयः	डॉ रूपनारायण पाण्डेयः	संस्कृत मञ्जरी जनवरी-मार्च 1995 पृ.सं.57
23	अभागिनी (एकाङ्की नाटिका)	डॉ ओमप्रकाश पाण्डेयः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.-दिसम्बर 1997 पृ.सं.65
24	महत् पुण्यं विधवाऽऽवेदनम्	राघवेन्द्र शर्मा	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.-दिसम्बर 2006 पृ.सं.27
25	उपायोऽपायतो लब्धः	गोपबन्धु मिश्रः	संस्कृत प्रतिभा जुलाई-सितम्बर 2014 पृ.सं.51
26	जागर्तिः (एकाङ्की)	रामशङ्कर अवस्थी	संस्कृत प्रतिभा अप्रेल-जून 2014 पृ.सं.84
27	नाऽन्यः पन्थाः (लघुरूपकम्)	अभिराज राजेन्द्रमिश्रः	संस्कृत प्रतिभा अप्रेल-दिसम्बर 2012 पृ.सं.143
28	भाटकिवृत्तम्	गोपबन्धु मिश्रः	संस्कृत प्रतिभा जनवरी-दिसम्बर 2013 पृ.सं.195
29	खोंखीप्रहसनम्	प्रो. अभिराज राजेन्द्रमिश्रः	संस्कृत प्रतिभा अप्रेल-मार्च 2010 पृ.सं.67
30	चाणक्य सन्देशः	प्रो. चौडूरि उपेन्द्रावः	संस्कृत प्रतिभा अप्रेल-मार्च 2010 पृ.सं.75
31	वर यात्रा	डॉ चन्द्रमौलिः नाटकरः	संस्कृत प्रतिभा/अष्टादश उन्मेषः 1990 पृ.सं.124
32	विश्वविमर्शविलासः	श्री परमहंस मिश्रः	संस्कृत प्रतिभा/सप्तदश उन्मेषः प्रथम द्वितीय विलासै पृ.सं.92
33	तस्य निमित्त परीष्टिः (प्रहसनम्)	श्री पट्टाभिराम शास्त्री	संस्कृत प्रतिभा/षोडश उन्मेषः प्रथम द्वितीय विलासै पृ.सं.48

क्रमशः...

(तालिका क्रमशः) – 92

क्र॰	एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
34	स्वप्नाजागरणं वरम् (एकाङ्की रूपकम्)	अभिराज राजेन्द्रमिश्रः	संस्कृत प्रतिभा/षोडश उन्मेषः पृ.सं.55
35	ध्रुवम् (एकाङ्की नाटकम्)	डॉ रामकिशोर मिश्रः	संस्कृत प्रतिभा/षोडश उन्मेषः पृ.सं.64
36	रक्तदानम्	जनक एच दवे	संस्कृत प्रतिभा/द्वादश उन्मेषः प्रथमो विलासः 1978 पृ.सं.59
37	वरूथिनी प्रवरम्	वेदुल सुब्रह्मण्य शास्त्री	संस्कृत प्रतिभा/द्वादश उन्मेषः प्रथमो विलासः 1978 पृ.सं.65
38	रागविरागं नाम प्रहसनम्	श्री जीवन्यायतीर्थ	संस्कृत प्रतिभा/द्वितीयो विलासः अक्टूबर 1959 पृ.सं.164
39	पुनः सृष्टिः	दे.ति. ताताचार्यः	संस्कृत प्रतिभा/प्रथमोन्मेषः अक्टूबर 1959 पृ.सं.180
40	शार्दूर्ल सम्पातो नाम (एकाङ्क रूपकम्)	के.ल. व्यासराज शास्त्री	संस्कृत प्रतिभा/प्रथमोन्मेषः अक्टूबर 1959 पृ.सं.198
41	द्यूतानर्थम्	डॉ नन्दकिशोर गौतम उपाध्याय निर्मल	स्वरमङ्गला अक्टू.-दिसम्बर 2006 पृ.सं.70
42	न्यायोऽकब्बरीय	मेवाराम कटारा पङ्क	स्वरमङ्गला जनवरी-मार्च 2009 पृ.सं.53
43	आहूतिः	लोकेश कुमार शर्मा अङ्ग	स्वरमङ्गला जुलाई-सितम्बर 2007 पृ.सं.76
44	जीवन्भद्राणि पश्यति	डॉ राजकुमारी त्रिखा	स्वरमङ्गला अप्रेल-जून 2008 पृ.सं.43
45	मण्डूक प्रहसनम्	अभिराज राजेन्द्रमिश्रः	स्वरमङ्गला अप्रेल-जून 2008 पृ.सं.47
46	शिवशिवत्वम्	मेवाराम कटारा पङ्क	स्वरमङ्गला जनवरी-मार्च 2003 पृ.सं.50
47	गुरूभक्त एकलव्यः (ध्वनिरूपकम्)	डॉ भावना आचार्य	स्वरमङ्गला जनवरी-मार्च 2003 पृ.सं.71
48	रेलमन्त्री	दुर्गादत्त शास्त्री विद्यालंकार	श्यामला अगस्त 1994 पृ.सं.39
49	सङ्गच्छध्वम् (ध्वनिरूपकम्)	डॉ ओमप्रकाश सारस्वत	श्यामला 1997-98 पृ.सं.119
50	भोलारामस्य जीवः	आचार्य ओमप्रकाश राही	श्यामला 1997-98 पृ.सं.126
51	वसुमित्र विजयम्	डॉ कैलासनाथ द्विवेदी डी.लिट	स्वरमङ्गला जुलाई-दिसम्बर 2001 पृ.सं.114
52	कार्गिलयुद्धम्	डॉ देवेन्द्रनाथ पाण्डेय	स्वरमङ्गला जुलाई-दिसम्बर 2001 पृ.सं.123

क्रमशः...

(तालिका क्रमशः) – 92

क्र॰	एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
53	मुण्डितमण्डन प्रहसनम्	मिश्रः अभिराज राजेन्द्रः	स्वरमङ्गला जुलाई-सितम्बर 2008 पृ.सं.78
54	वृद्धस्य औदार्यम्	सुखदेव शर्मा	ष्यामला अगस्त 1993 पृ.सं.82
55	देवसेनसौहन्यवधम् नामैकाङ्करूपकम्	डॉ सुदर्शन शर्मा	विश्वसंस्कृतम् मार्च-जून 2015 पृ.सं.73
56	अक्षरदूता गृहे गृहे	नित्यगोपाल कटारे	संस्कृत मञ्जरी जनवरी-मार्च 1996 पृ.सं.42
57	भारताभ्युदयम्	डॉ दशरथ द्विवेदी	विश्वसंस्कृतम् अप्रेल-जून 2002 पृ.सं.20
58	स्वराजस्याधारशिशला (एकाङ्की नाटकम्)	डॉ बलवीरदत्त शास्त्री साहित्यायुर्वेदाचार्यः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.-दिसम्बर 1995 पृ.सं.05
59	प्रत्यावर्तनम्	डॉ मीरा द्विवेदी	संस्कृत मञ्जरी अक्टू. 2005–मार्च 2006 पृ.सं.35
60	नरबलिः (लघु नाटक)	मेवाराम कटारा पङ्क	संस्कृत मञ्जरी जून-सितम्बर 2002 पृ.सं.37
61	अश्वस्य संस्कृत शिक्षक पण्डितः	डॉ प्रशस्य मिश्र शास्त्री	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.01
62	षड्यन्त्र विस्फोटनम्	डॉ उर्वी	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.04
63	दूरदर्शनम्	डॉ प्रकाश मिश्र शास्त्री	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.08
64	दुःखमूलमसंयमः	ओमप्रकाश ठाकुरः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.14
65	निरक्षरता	हरिहर शर्मा अर्यालः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.17
66	सैनिक नाटिका	कृष्णदत्त शर्मा शास्त्री	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.21
67	आधुनिकः सुदामा कृष्णश्च	ओमप्रकाश राही	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.26

क्रमशः...

(तालिका क्रमशः) – 92

क्र॰	एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
68	ग्रहलज्जम्	मदनमोहन जोशी	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.30
69	प्रेमविजयः	डॉ क्षेमचन्द्रः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.39
70	आचारः कुलमाख्याति	डॉ इन्दु मल्होत्रा	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.43
71	वसुमित्रविजयम्	डॉ कैलासनाथ द्विवेदी डी.लिट	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.47
72	दुष्कर्मणां दोषी कः	डॉ शिवप्रसाद त्रिपाठी	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.55
73	परिश्रमेण एव सिद्यन्ति कार्याणि	श्रीमती मधु तलवारः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.62
74	ज्योतिर्दर्शनम्	श्री बाबूराम अवस्थीः	संस्कृत मञ्जरी अक्टू.1999-दिसम्बर 1999 पृ.सं.65
75	पत्नीत्यागम्	डॉ रामकिशोर मिश्रः	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.21
76	सुरभारती क्रन्दनम्	डॉ जगदीश प्रसाद सेमवाल	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.30
77	विद्याप्रदविनोदनाम त्रोटकम्	पं. या.वि. देवासकरः	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.
78	आन्ध्रधरणीवीरवरेण्य (ऐतिहासिक नाटकम्)	ब्र. वेदबीर	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.43
79	कोऽपि मुमुर्हषति (पद्यमयमेकपात्रं रूपकम्)	डॉ श्यामदेवः पाराशरः	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.49
80	शरवधम् (हर्षचरितमाधृत्य)	डॉ सुदर्शन शर्मा	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.57

क्रमशः...

(तालिका क्रमशः) – 92

क्र॰	एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
81	सङ्गतस्वप्नम् (बालानां कृते एकाङ्क रूपकम्)	डॉ केशवचन्द्रः दाश	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.69
82	किं देवेन निर्मितं किं च मनुष्येण	डॉ सुद्युम्नाचार्यः	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.73
83	स्वधर्मे निधनं श्रेयः	श्री रामस्वरूप शास्त्री अमर	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.77
84	मिथो मित्राणि	वैद्य रामस्वरूप शास्त्री	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.79
85	रेलमन्त्री	दुर्गादत्त शास्त्री विद्यालंकार	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.81
86	आदर्शन्यायम्	श्री दामोदर दत्त शास्त्री	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.87
87	विक्रमादित्यस्य संस्कृत अनुरागः	डॉ राधाकृष्ण निगम बोध तीर्थ	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.97
88	दैवज्ञाकिन्नरी	श्री साधुराम	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.105
89	बलवान् सर्वत्र पूज्यते	श्री चक्रधारी शास्त्री	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.111
90	भूमिपुत्रम्	डॉ ओमप्रकाश सारस्वत	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.113
91	परशुराम प्रतिज्ञा	डॉ श्रीमती सुधा सहाय	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.121
92	सः पलायित एव	डॉ हरिदत्त पालिवालः निर्भयः	विश्वसंस्कृतम् सितम्बर-दिसम्बर 1987 पृ.सं.126
93	पावन प्रणयः	मेवाराम कटारा पङ्क	संस्कृत मञ्जरी जनवरी-मार्च 2008 पृ.सं.35
94	चाणक्य सन्देशः	प्रो. चौडूरि उपेन्द्रराव	श्यामला अर्धवार्षिक संस्कृत पत्रिका दिस.2009 पृ.सं.47
95	विश्रान्तिः	डॉ मदनमोहन वर्मा	श्यामला अर्धवार्षिक संस्कृत पत्रिका दिस.2009 पृ.सं.57
96	सौभाग्यम्	पण्डित गोविन्द झा	संस्कृत संजीवनम् 1992 प्रथमोऽंक पृ.सं.45
97	स्वातन्त्र्य सुखम्	डॉ शिवप्रसादो भारद्वाजः	विश्वसंस्कृतम् सित.1997 पृ.सं.11
98	मण्डूक प्रहसनम्	मिश्रः अभिराज राजेन्द्रः	अजस्रा जुलाई-अक्टू. 2000 पृ.सं.79

क्रमशः...

(तालिका क्रमशः) – 92

क्र॰ एकाङ्की रूपक	रचनाकार	पत्रिका अङ्क/वर्ष/पृष्ठ संख्या
99 विदग्धभारविः	लक्ष्मणसिंह अग्रवाल	विश्वसंस्कृतम् जून 1996 पृ.सं.105
100राधानुनय	डॉ नलिनी शुक्ला	अर्वाचीन संस्कृतम् 15 अक्टू.1994 पृ.सं.01
101जनन्याः गुरुतरा	मेवाराम कटारा	संस्कृत मञ्जरी जुलाई-सितम्बर 1997 पृ.सं.15
102विपिडिता	प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेयः	विश्वसंस्कृतम् सित.-दिसम्बर 2011 पृ.सं.15
103चक्रानुसरणम्	डॉ रमाकान्त शुक्लः	अर्वाचीन संस्कृतम् 15 अक्टू.1994 पृ.सं.0

सन्दर्भग्रन्थसूची

पुस्तक (Book)

1. गयावाल, लाला शंकर (लेखक). (2020). *स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृतशोधपत्रकारिता*. विद्यानिधि प्रकाशन, डी. 10/1061, खजूरी खास, दिल्ली-110090.

त्रैमासिक शोधपत्रिकाएँ (Quarterly Research Journals)

2. *विश्वसंस्कृतम्*. (1963). विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब।
3. *स्वरमङ्गला*. (1975). राजस्थान संस्कृत अकादमी, झालाना डूँगरी, जयपुर, राजस्थान।
4. *अजस्रा*. (1977). अखिल भारती संस्कृत परिषद्, महात्मा गांधी मार्ग, हजरत गंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
5. *अर्वाचीन संस्कृतम्*. (1979). देववाणी परिषद्, आर-6 वाणी विहार, नई दिल्ली-110059।
6. *संस्कृत संजीवनम्*. (1982). बिहार संस्कृत संजीवन समाज, 211 पाटलीपुत्र कॉलोनी, पटना, बिहार।
7. *दूर्वा*. (1986). कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन, मध्यप्रदेश।
8. *संस्कृत मञ्जरी*. (1995). दिल्ली संस्कृत अकादमी, नया कार्यालय, पूर्व आर्य महिला महाविद्यालय, प्लाट नं. 5, झण्डेवालान, करोलबाग, दिल्ली।

षाण्मासिक शोधपत्रिकाएँ (Half-yearly Research Journals)

9. *संस्कृत प्रतिभा*. (1980). साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110002।
10. *श्यामला*. (1989). हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा, शिमला-171001, हिमाचल प्रदेश।
11. *प्रत्नकीर्ति*. (2014). प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान, आराजी 469, सत्यम् नगर कॉलोनी, भगवानपुर, बीएचयू, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।